eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में स्त्री शिक्षा की दशा एवं दिशा

डॉ0 श्याम कुमार चौधरी[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र महिला पी0जी0 कॉलेज, बहराइच, उ0प्र0

Received: 21 Dec 2024 Accepted & Reviewed: 25 Dec 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में स्त्री शिक्षा का क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। संविधान में समानता और शिक्षा के अधिकार की व्यवस्था, राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ, सर्व शिक्षा अभियान, बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाएँ तथा उच्च शिक्षा में आरक्षण एवं छात्रवृत्ति कार्यक्रमों ने स्त्री शिक्षा के विस्तार में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इसके बावजूद ग्रामीण, शहरी विषमता, बाल विवाह, गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ, डिजिटल विभाजन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी जैसी चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं। वर्तमान समय में स्त्री शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित न रहकर कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा, उच्च शोध तथा आत्मनिर्भरता से जुड़ रही है। यह अध्ययन स्वतंत्रता के बाद भारत में स्त्री शिक्षा की प्रगति, उसकी समस्याओं तथा भविष्य की दिशा का विश्लेषण करता है और यह प्रतिपादित करता है कि सशक्त, शिक्षित स्त्री ही समावेशी और सतत विकास की आधारशिला है।

मुख्य शब्द– स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता पश्चात भारत, शैक्षिक नीतियाँ, सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक समानता, बालिका सशक्तिकरण, शिक्षा में चुनौतियाँ, आत्मनिर्भरता

Introduction

''पढ़ी लिखी लड़की, रोशनी घर की ''कितना प्रफुल्लित करने वाला यह वाक्य है, यह वही लड़की है जो बेटी बनकर बूढ़े माता–पिता की सेवा करती है, बहन बनकर भाई के प्यार और अपनी रक्षा की आशा करती है,पति के संग जीवन के सुख दुख का निर्वाह करती है, माता के रुप में अपने बच्चों को ममता के आँचल से ढकती है दादी नानी बनकर बच्चों को लोरिया एवं कहानियां आदि सुनाकर उनकी जिज्ञासा शांत करती है। इस प्रकार न जाने कितने उत्तरदायितवों का निर्वाह वह अपने जीवन में करती है। फिर भी **अबला, असहाय विधवा, कलंकनी** आदि तमाम समाजिक लांछनों को सहती है। समाज के जिस सामाजिक स्तर पर यह रही है वहॉ अपने कर्तव्यों का ईमानदारी पूर्वक पालन करती है परन्तु समाज अपने पुरुष प्रभुत्व प्रवृत्ति के कारण इनको हमेशा दूसरे स्तर पर ला देता है और शोषित नजरों से देखता है इसका कारण है– **अज्ञानता, निरक्षरता, और रुढिवादिता।**

आर्थिक विकास के आँधी के इस दौर में बालिकाओं के जन्म लेने के हक के प्रति बर्बरता पर भी गर्मागरम बहस होती है। लड़के–लड़कियों की आबादी का अनुपात खतरनाक स्तर तक असंतुलित हो चुका है। यदि और देरी की गयी तो समाज का भयावह परिणाम भुगतने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। कन्या भूण हत्या की वजह से पिछले 30 वर्षो में एक करोड़ से ज्यादा बच्चियाँ कोख में ही मार दी गयी। पर कन्या अवहेलना की कहानी यही खत्म नहीं होती अगर लड़कियाँ पैदा हो भी जाएँ तो उन्हे पोषण नहीं मिलता, स्कूल जाती हैं तो वहाँ पूरी पढ़ाई तक प्रायः टिकने नही दिया जाता ,सौ बाधा पारकर लड़की अगर कॉलेज की दहलीज तक पहुँच जाये तो भी उसे सदैव शारीरिक एवं मानसिक शोषण का भय बना रहता हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

कार्य–स्थलो पर भी शोषण का जिन्न मुँह बनाये खड़ा होता है। विवाह के बाद पति एवं ससुराल वालों का दो दर्जे के व्यवहार की संभावना तथा दहेज का दानव भी उसे डराते है। समाज के ढेकेदार लडकियों की इस स्थिति में बुनियादी बदलाव के इच्छुक नही दिखते, पर अब लडकियाँ खुद विद्रोही तेवर अपना कर अपनी लड़ाई खुद लड़ने को तैयार है। **उदाहरण स्वरूप दिल्ली विश्वविद्यालय की लड़कियो का एकजुट होकर शोषण के खिलाफ खड़ा होना है।** एवं ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें लड़कियाँ अन्याय के विरूद्व अपनी आवाज उठाती हैं। यदि वह खुद अन्याय सही हैं तो वह अपनी लड़कियों को कभी उस अन्याय का हिस्सा नही बनने देती हैं क्योंकि अन्याय अब उन्हें मन्जूर नहीं । और आज जीवन के हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे बढ़ रही है तब उन्हें कमजोर क्यों माना जाये। हाल ही में हमारे देश की कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान प्रमुख आवाज बनकर उभरी। आज हर जगह यहॉ तक टी वी के मार्फत देश भर में चर्चित होकर वे लड़कियों के लिये प्रेरणा स्त्रोत बन रही है अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, अपनी बात सही जगह तक पहुँचाना और अपने पक्ष में कानूनों का इस्तेमाल करना भी वे सीख गई है। जैसे–जैसे लड़कियों के जन्म, स्वास्थ्य और शिक्षा को तरजीह मिलने लगेगी सामाजिक संतुलन उनके पक्ष में बनता जायेगा तब यही महिलाएँ विलक्षण प्रतिभा का उदाहरण बनेंगी चाहे वह किसी देश की राष्ट्रपति (भारत की वर्तमान) राष्ट्रपति श्रीमती दौपदी मुर्मू जी के सन्दर्भ में या किसी देश के शासन का बागडोर के (पूर्व रुप में प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इन्दिरा गॉधी जी के सन्दर्भ में) या अपने हाथों में लेकर उसका संचालन करना हो, या किसी प्रदेश की शासन व्यवस्था (श्रीमती सरोजनी नायडू एवं मुख्यमंत्री मायावती जी के सन्दर्भ में) और जब महिलाओं की शिक्षा की बात है तो (सावित्री बाई फुले के सन्दर्भ में) के प्रयासों का जिक्र करना सबसे ज्यादा जरुरी हो जाता है वह भारत की प्रथम महिला अध्यापिका बनी (1848) और उन्होनें अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ साथ मिलकर लड़कियों के लिये एक विद्यालय खोला। यही नहीं आंतरिक्ष वैज्ञानिक (कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स के सन्दर्भ में) बनकर विश्व के विकास तथा अन्तरिक्ष के ज्ञान से ज्ञान से अवगत कराना हो तो या खेल के क्षेत्र में (सानिया नेहवाल, सानिया मिर्जा के सन्दर्भ में) या साहित्य की रचना करके (महादेवी वर्मा के सन्दर्भ में) सुन्दरम की प्राप्ति करना हो आदि सभी स्थानों पर चाहे वह आईएएस आईपीएस, डॉक्टर, प्रोफेसर, इंजीनीयर, पॉयलट, आदि सभी स्थानों पर उच्च स्थान प्राप्त कर अपनी शक्ति का प्रचम लहराती है। और वही समाज में अगली कतार में दिखाई देती है।

भारतीय बालिकाओं की प्रस्थिति कालांतर में निम्न से उच्च सीमा में बदलती रही है, यद्यपि बालिकाओं की परिस्थिति जैसी आज दिखाई पड़ती है वैसी पिछले कई सदियों में इतनी अच्छी नहीं है। जब कभी महिला पुरुष के लैंगिक आधार पर इसे जाँचा जाता है तो विषमता स्पष्ट दिखाई देने पड़ती है जिसे आज तक समाप्त नहीं किया जा सका। बालिकाओं के विकास हेतु भारतीय संविधान, नियोजित विकास रणनीति, कानूनों नीतियों इत्यादि में प्रतिबद्वताएँ तो व्यक्त की गई है परन्तु इन्हे आज भी पूरा नहीं किया जा सका है। जब भी 10वी या 12वी के रिजल्ट आते है तो हर बार यही सुनाई देता है कि 'छात्राओं ने छात्रो से बाजी मार ली' छात्राओं का पलड़ा भारी, पास होने के मामले में लड़के फिर रह गये पीछे आदि। यह बस पढ़ने और सुनने में कितना सुखद् प्रतीत होता है क्योंकि देश में 'बालिकाओं को पढ़ाया जा रहा है परिवार के अन्दर नियमों में कही न कहीं बदलाव जरुर आया है। अब बालकों की तरह बालिकाओं के लिये भी शिक्षा को आवश्यक माना जा रहा है। बालिकाओं के शिक्षा पीछे अब मात्र 'विवाह'ही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

अकेला कारण नही रह गया है उनके लिये भी कैरियर महत्वपूर्ण है इसे स्वीकार भी किया जा रहा है। परिणाम स्वरुप, पारिवारिक निर्णय प्रक्रियाओं में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। स्त्री–पुरुष भेद बहुत धीमा ही सही अन्दर ही अन्दर मिट भी रहा है पर जरा ठहरिये– इन सबके बीच बालिका शिक्षा को अब भी पूरे देश में खासकर ग्रामीण इलाको में गम्भीर समस्या के रुप में देखा जाता है तो कुछ सफल। स्कूल में बालिकाओ का नामांकन हो वे रोजाना स्कूल जायें और फिर वहाँ शिक्षक शिक्षिका भी नियमित रुप से आये और पढ़ाये कम से कम यह छोटी सी कड़ी तो पूरी होनी चाहिये, तभी तो कोई पढ़ सकता है। अतः आज महिला सशक्तिकरण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार एवं समाज में अच्छे से रह सकती है। सशक्तिकरण से महिलाओं की प्रस्थिति मे ं परिवर्तन सम्भव हुआ है और वे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढकर आ रही है और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में जागरुकता आयी है, वे अपने बारे में सोचने लगी है, उन्होने महसूस किया है कि घर के बाहर भी जीवन है, महिलाओ में आत्मविश्वास का संचार हुआ है, उनके व्यक्तित्व मे ं निखार आया है।

स्त्री शिक्षा की वर्तमान स्थिति– भारत में महिलाओं की स्थिति 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल साक्षरता दर में 74.04 प्रतिशत है और महिलाओं में साक्षरता दर 65.46 है। 2001 में देश में महिला साक्षरता प्रतिशत करीब 53.67 प्रतिशत थी। देश में साक्षरता दर 1951 में 18.33 प्रतिशत से 2011 की जनगणना के अनुसार 74.04 प्रतिशत हो गई। महिला साक्षराता दर भी 1951 में करीब 8.86 प्रतिशत से बढकर 2011 में 65.46 प्रतिशत हो गई। 1991–2001 की अवधि के दौरान महिला साक्षरता दर में 14.46 प्रतिशत की वृद्वि हुई। जबकि पुरुष साक्षरता दर में 11,13 प्रतिशत की वृद्वि हुई। महिला साक्षरता दर में वृद्वि पुरुष साक्षरता दर की तुलना में 3.33 प्रतिशत अधिक थी। स्त्री शिक्षा की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण सारणी प्रस्तुत की जा सकती है जो स्त्री शिक्षा की वर्तमान। स्थिति को स्पष्ट करने में सहायक है–

सारणी–(1)

1951–2011 तक भारत में पुरुषों एवं महिलाओं के बीच की साक्षरता दर

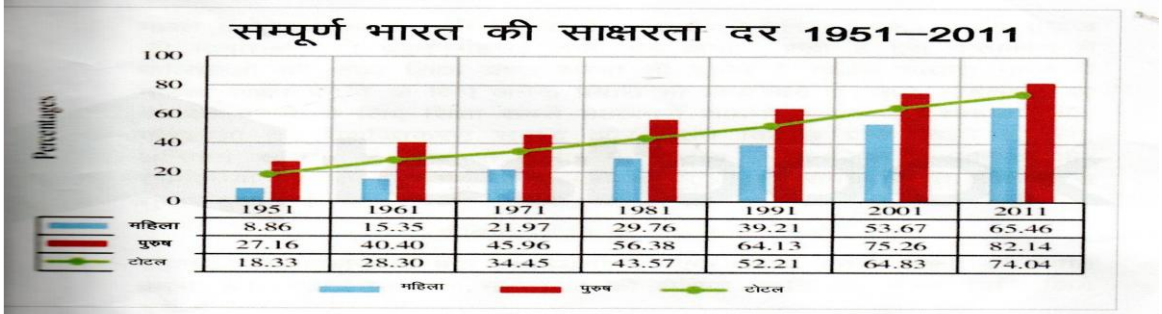

	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
महिला	8.86	15.35	21.97	29.76	39.21	53.67	65.46
पुरुष	27.16	40.40	45.96	56.38	64.13	75.26	82.14
टोटल	18.33	28.30	34.45	43.57	52.21	64.83	74.04

(स्त्रोत ऑल इण्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन रिपोर्ट के आधार पर)

सारणी–(2)

उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर 2011 की जनगणना के अनुसार

राज्य	साक्षरता दर प्रतिशत	पुरुष दर प्रतिशत	महिला दर प्रतिशत
उत्तर प्रदेश	69.7 %	79.2%	59. 3%

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

स्त्रोत–(ऑल इण्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन रिपोर्ट के आधार पर)

सारणियों से स्पष्ट है कि हमारे राष्ट्र में अभी भी लड़कियों का एक बड़ा प्रतिशत शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहा है। उत्तर प्रदेश में लड़कियों की शिक्षा की स्थिति और भी सोचनीय प्रतीत होती है उपर्युक्त आँकड़े उत्तर प्रदेश की औसत स्थिति दर्शाते है जिसके पीछे **'स्त्री'–पुरुष, शहरी और ग्रामीण क्षेत्र** , धनी व निर्धन वर्ग, अगड़े और पिछले समुदयो के बीच की घोर विषमताएँ है। मानव **विकास के संकेतको में स्त्री वर्ग, ग्रामीण क्षेत्र ,दलित एवं मुस्लिम समुदाय औसत से भी पीछे नजर आते है।**

भारत में कुछ राज्य ऐसे भी है जिसमे रूढ़िवादिता दरिद्रता, पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता ने बहुत गहराई तक जड़ जमा–रखी है इस वातावरण में बालिकाओं की उच्च शिक्षा तो दूर की बात है गाँव में बने विद्यालयों में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करना भी दुर्लभ है यद्यपि स्वतन्त्र भारत में महिला शिक्षा प्रगति के लिए अनेक प्रयास भी किये गये है। अतः महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शाधनों में एक हैं। लैंगिक समानता और महिलाओं का सशक्तिकरण समृद्धि और सतत विकास प्राप्त करने के लिए अनिवार्य स्वंत्रता के बाद से भारत में राष्ट्रीय , सामजिक , आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए रणनीतियों को अपनाया गया है जिससे महिलाओं की समग्र स्थिति में तेजी से सुधार हुआ हैं।

शैक्षिक प्रगति के प्रयास– महिलाओं के विकास के प्रति प्रतिबद्धता का एक उपाय उनकी शिक्षा की प्रगति करना हैं। स्वतन्त्र भारत में महिलाओं की शैक्षिक प्रगति हेतु निम्न प्रयास किये गये हैः–

1 विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49)

आयोग ने यह माना की शिक्षित महिलाओं के अभाव में पुरूषों को भी शिक्षित नहीं किया और इस आयोग ने महिलाओं को अधिक से शिक्षा सम्बन्धी सुविधाएं देने के साथ ही ग्रह प्रबन्ध की शिक्षा, ललित कला, शोषण की शिक्षा और उच्च स्तर सह शिक्षा प्राप्त के लिए प्रोत्साहित करने के सुझाव दिए।

2 आचार्य नरेन्द्र देव समिति व माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53)

समिति ने यह कहते हुए बालिका शिक्षा पर अधिक जोर दिया की स्त्री एवं पुरूष की कुछ आवश्यकताएँ तो समान होती है। अतः उनकी शिक्षा दोनो को समान रूप से दी जाये। और कुछ आवश्यकताएँ भिन्न होती है। अतः उनकी शिक्षा की व्यवस्था अलग– अलग की जायें। माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालय खोलने, साथ ही गृह विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था हेतु सुझाव दिए।

(3) राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति (1958–59)

स्त्री शिक्षा की समस्याओं तथा उनका समाधान करने के उपायों पर विचार करने के लिए सन् 1958 में भारत सरकार ने दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति' का गठन किया गया । जिसे समिति के अध्यक्षता के नाम पर दुर्गाबाई समिति कहकर भी पुकारा जाता हैं समिति ने स्त्री शिक्षा को विशिष्ट समस्या के रूप में स्वीकार।

(4) दुर्गा बाई देशमुख समितिः– (1959)

इस समिति ने अपने सुझाव में कहा कि बालिका शिक्षा को लम्बे समय तक एक विशिष्ट समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए, ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की निर्धन बालिकाओं को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के लिए विद्यालयों की स्थापना तथा लड़कियो को मिडिल स्तर तक की शिक्षा निःशुल्क दी जाये, लड़कियों को स्कूल आने–जाने हेतु यातायात सुविधा प्राथमिक स्तर पर समान पाठ्यक्रम , महिला अध्यापको के प्रशिक्षण को बढ़ावा उच्च शिक्षा में छात्राओं को छात्र –वृत्ति, बालिकाओं के व्यवसायिक प्रशिक्षण हेतु सघन पाठ्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इस समिति के सुझाव पर ही राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद् का 1959–60 में गठन किया गया।

(5) राष्ट्रीय महिला शिक्षा परिषद :–(1959–60)

इस समिति का उद्देश्य महिला शिक्षा के सम्बन्ध में जनमत तैयार विद्यालय स्तर और बालिकाओं एवं स्त्रियो की शिक्षा के प्रसार में और सुधारों , लक्ष्यो ,नीतियों कार्यक्रमों, प्राथमिकताओं के बारे में सुझाव देना , विद्यालय से सम्बन्धित समस्याओं पर सरकार को परामर्श देना तथा इस क्षेत्र में दिये जाने वाले व्यक्तिगत प्रयासो हेतु सर्वोत्तम सुझाव देना है। इसके अलावा इस समिति का कार्य बालिका शिक्षा की प्रगाति मुल्यांकन करना, समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार सर्वेक्षण, अनुसंधान एवं विचार गोष्ठियो का आयोजन किये जाने की सिफारिश भी की गयी हैं।

(6) भक्त वत्सलम समिति (1963–65)

महिलाओं की शिक्षा के प्रति जन सहयोग में कमी के कारणों का पता लगाना। एवं जन कमी के कारणों का पता लगाना । एवं जन सहयोग की भूमिका को स्वीकार करके स्कूल खोलने में, भवन तैयार करने में सह शिक्षा के प्रचार में महिलाओं मे अध्ययन व्यवसाय को लोकप्रिय बनाने में तथा विवाहित महिलाओं को अंशकालीन शिक्षक कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करनें में प्रत्यक्ष जन सहयोग प्राप्त करने की दिश मे कार्य करने का सुझाव दिया।

(7) हंसा मेहता समिति (1964–65) एवं कोठारी आयोग (1964–66)

इस समिति ने अपने सुझाव में लड़कियों की शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना, लड़कियों की शिक्षा के लिये उचित दृष्टिकोण का निर्माण कराना जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिये और कहा कि विद्यालय स्तर पर बालक तथा बालिकाओं के पाठ्यक्रम में अन्तर नही होना चाहिए एवं भारतीय सविंधान में संकल्पित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये लड़कियो की अनिवार्य शिक्षा के लिये अधिकाधिक प्रयास किये जाये। इसी प्रकार कोठारी आयोग ने स्त्री शिक्षा के सभी अंगो के विषय में अपने विचार को लेख बद्व किया है और स्त्री शिक्षा के विस्तार के बारे मे उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता और स्त्री शिक्षा को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग मानते हुए स्त्री शिक्षा में आने वाली बाधाओं हेतु ठोस कदम उठाने पर जोर दिया है।

8 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968)

बालक और बालिकाओं को समान शैक्षणिक अवसर प्रदान करने पर बल दिया गया है।

9 फुलेरेनु गुहा समितिः–1974

सभी स्तरों पर सह शिक्षा विद्यालयों की स्थापना करना।

10 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

इस शिक्षा नीति मे स्त्रियों की शिक्षा मे व्यापक परिवर्तन लाने की संकल्पना की गयी शिक्षा को स्त्रियों के स्तर में मूलभूत परिवर्तन लाने के साधन के रुप में प्रयोग करने को कहा गया तथा विभिन्न पाठ्यक्रमों के अंग के रुप में स्त्री अध्ययनों को बढावा दिया जायेगा। महिलाओं की निरक्षरता दूर करने के लिये प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जायेगी स्त्रियों की व्यावसायिक तकनीक तथा विभिन्न प्रकार की औद्योगिक शिक्षा में भूमिका के लिये सर्वाधिक बल दिया जायेगा। 1986 की शिक्षा नीति को कार्यरुप प्रदान करने के लिये हर क्षेत्र में कार्य शुरु किये गये स्त्री शिक्षा के प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन शिक्षा के हर क्षेत्र पर शुरु किये गये।

11 जनार्दन रेड्डी समिति (1992)

महिलाओं को शिक्षा प्राप्ति हेतु विशेष सुविधाएँ और प्रोत्साहन दिया जाना।

12 कस्तूरबा गाँधी शिक्षा योजना (1997)

महिला साक्षरता दर में वृद्वि तथा विशेष विद्यालयों की स्थापना।

13 मौलाना आजाद राष्ट्रीय छात्र वृत्ति 2003

अल्पसंख्यक समुदाय में गरीब प्रतिभाशाली लड़कियों को उच्च शिक्षा हेतु विशेष छात्रवृत्ति प्रदान करना।

14 कस्तूरबा गाँधी विद्यालय योजना 2004–05

बालिका शिक्षा को बढावा देने व बालक–बालिका के प्रति समाज में व्याप्त लिंग विभेदीकरण को समाप्त करने हेतु भारत सरकार ने एक नई योजना का प्रारम्भ 2004–05 मे किया। जिसे महात्मा गाँधी जी की पत्नी 'कस्तूरबा' के नाम पर रखा गया है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की अपवंचित वर्ग से लिंग विभेदीकरण को समाप्त करना उच्च प्राथमिक स्तर पर बालक–बालिकाओं के विद्यालयो के नामांकन में व्याप्त अन्तर को समाप्त करना अनुसूचित जाति पिछली जाति, अनूसूजित जनजाति, अल्पसंख्यक तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले माता–पिता अभिभावकों को उच्च प्राथमिक स्तर तक की निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना एवं अपवंचित वर्ग की बालिकाओं को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना है।

15 कन्या विद्या धन योजना (2004)

इस योजना का आरम्भ उत्तर प्रदेश में राजाज्ञा संख्या 1273/15–10–2004–47(28) /2003 टी0सी के द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश में बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये कन्या विद्या धन योजना का आरम्भ 2004 में किया गया। जिसमें बालिकाओ को 20 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गयी है।

16 बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना (2015)

बेटी बचाओ, बेटी पढाओ ं की शुरुआत वर्ष 2015 में देश भर में बाल लिगं के अनुपात के मुददे को संबोधित करने हेतु की गयी थी। इसके तहत कन्या कन्या भ्रूण हत्या रोकने, स्कूलों में लड़कियों की संख्या बढ़ाने ,स्कूल छोड़ने वालो की सख्या को कम करने, शिक्षा के अधिकार के नियमो ं को लागू करने और लड़कियो के लिये शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये यह योजना बनाई गई।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

17 सुकन्या समृद्वि योजना (2015)

इस योजना का उद्देश्य बालिकाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि वो अपनी पढाई को जारी रख सके।

18 महिला शक्ति केन्द्र योजना (2017)

इस योजना का उद्देश्य देश के सभी जिलो में महिला सशक्तिकरण केन्द्र उपलब्ध कराना है।

19 नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)

NEP 2020 के अनुसार, शिक्षा के सभी स्तरों में लिंग संतुलन सामाजिक, आर्थिक रुप से वंचित समूहो की महिलाओं की गुणवत्तापूर्वक शिक्षा, शिक्षण परिसरों में महिलाओं की सुरक्षा आदि के प्रति यह नीति जागरुक और संवेदनशील है।

निष्कर्षः– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में स्त्री शिक्षा ने धीरे–धीरे अंधकार से प्रकाश की ओर कदम बढाये। आरम्भ में जहॉ अशिक्षा, बाल विवाह, और रुढ़िवादिता ने स्त्रियों को शिक्षा से वंचित किया, अब वही स्त्रियॉ विज्ञान, रक्षा, प्रशासन, राजनीति अंतरिक्ष तक पहुँच रही है, आज की दिशा यह दर्शाती है कि महिलाएँ केवल साक्षर नही हो रही बल्कि शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर और निर्णयकर्ता बन रही है। इसका सशक्त उदाहरण हाल ही में हुआ 'आपरेशन सिंदूर' है जिसमें कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह जैसी महिला अधिकारियों ने सेना में नेतृत्व की भूमिका निभाई। यह दिखाता है कि शिक्षा के बल पर महिलाएँ अब राष्ट्र निर्माण में भी अग्रणी भूमिका निभा रही है। इस प्रकार , स्त्री शिक्षा की दशा अब आशाजनक है और और दिशा स्पष्ट सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व की ओर।

सन्दर्भ–

1. पाठक, पी0डी0 2007, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ–विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ।
2. लाल रमन बिहारी, 2007–08, भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोठ, मेरठ।
3. तुलनात्मक आँकड़े ' भारतीय जनगणना 2011।
4. बाजपेयी, एल0बी0 2001, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं सामाजिक प्रवृत्तियां– आलोक प्रकाशन लखनऊ, इलाहाबाद।
5. उत्तर प्रदेश का चिन्ताजनक सामाजिक विकास (सम्पादकीय) हिन्दुस्तान 21 सितम्बर 2007।
6. सर्व शिक्षा में पिछड़ती लड़कियाँ (सम्पादकीय) हिन्दुस्तान 12 सितम्बर 2007
7. सारणी प्रथम ऑल इण्डिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन की रिपोर्ट के आधार पर।
8. करेंट अफेयर्स वार्षिकांक 2024 सपीडीप्रकाशन ।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, pib.gov.in>।